"भारत–चीन संबंध : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

(2004 से वर्तमान तक)"

"India-China Relation : An Analytical Study

(2004 To Present)"

A

SYNOPSIS SUBMITTED FOR THE DEGREE OF

DOCTOR OF PHILOSOPHY

IN

POLITICAL SCIENCE

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY

AJMER

2017

Under the supervision of :

Dr. CHANDA KESWANI

Lecturer, Department of Political Science

SPC Government College, Ajmer

Submitted By :

DEEPAK BARIYA

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY,AJMER

APPENDIX –IV

FORMAT FOR OUTLINE OF PROPOSED RESEARCH WORK

1.Name of Scholar (In English) : DEEPAK BARIYA

(In Hindi) : दीपक बारियाँ

2.Title of Research work (In English) : India-China Relation: An Analytical Study (2004 To Present)

(In Hindi) : भारत–चीन संबंधः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (2004 से वर्तमान तक)

3. Location

(a) Institution /Department Where the work is to be done : Department of Political Science, SPC Government College Ajmer

(b) Geographical area of Investigation,If any : National and International

4. Introduction Importance of Proposed Investigation, Objective.

5. Review (work alredy done on the subject fo Proposed research study)

6. Research gaps identified in the Proposed Field of investigation (Based onthe Review)

7. Major Hypothesis, if any

8. Materials and Methods/ Research methodolo

9. List of references cited.

1.Name of Scholar (In English) : DEEPAK BARIYA

(In Hindi) : दीपक बारियाँ

2.Title of Research work (In English) : India-China Relation: An Analytical Study (2004 To Present)

(In Hindi) : भारत–चीन संबंधः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (2004 से वर्तमान तक)

3. Location

(a) Institution /Department Where the work is to be done : Department of Political Science, SPC Government College, Ajmer

(b) Geographical area of Investigation, If any : National and International

4. Introduction Importance of Proposed Investigation, Objective

प्रस्तावित शोध की प्रस्तावना, महत्त्व एवं उद्देश्य

प्रस्तावित शोध की प्रस्तावनाः

वर्तमान समय में विश्व राजनीति में अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के विकास व निर्माण का व्यापक महत्त्व है। एशियाई महाद्वीप में भारत–चीन संबंध सर्वाधिक जटिल संबंधों में से एक है। प्राचीन काल से ही भारत व चीन संस्कृति व सभ्यता के केन्द्र रहे हैं, इनकी सांस्कृतिक परम्परा अति प्राचीन हैं। दोनों ही देशों ने विश्व के अन्य देशों को शान्ति व संस्कृति का संदेश दिया है। भारत व चीन के मध्य सांस्कृतिक व आध्यात्मिक संबंधों की एक लम्बी श्रृंखला देखने को मिलती है। चीन आरम्भ से ही एक बौद्ध देश है, जबकि भारत बौद्ध धर्म की भूमि रहा है। भारत से ही बौद्ध धर्म हिन्द–चीन होता हुआ चीन पहुँचा। चीन में बौद्ध धर्म प्रचार के पौराणिक काल में ही भारत से अनेक बौद्ध भिक्षु बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए चीन पहुँचे। साथ ही चीन के लोगो में भारत आने तथा यहाँ आकर बौद्ध धर्म के धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करने और उन्हें एकत्र करने की इच्छा जाग्रत हुई, फलस्वरूप फाह्यान, हेनसांग तथा इत्सिंग जैसे प्रसिद्ध चीनी यात्री भारत आये।

विश्व का सबसे बड़ा लोकतन्त्र भारत विश्व–शान्ति का समर्थक रहा है, इसकी नीतियाँ कभी भी विस्तारवादी नहीं रही, जबकि साम्यवादी चीन की नीतियाँ विस्तारवादी तथा पडौसी क्षेत्रों को हड़पने की रही है, यही कारण है कि चीन के साथ भारत के संबंध ने भारतीय विदेश नीति को जितना प्रभावित किया उतना संभवतः किसी अन्य देश के साथ हमारे संबंध में नहीं किया। 15 अगस्त 1947 में भारत ने स्वतन्त्रता प्राप्त की, दूसरी ओर 01 अक्टूबर 1949 में चीन में साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई। भारत प्रथम असाम्यवादी देश था जिसने साम्यवादी चीन को समर्थन प्रदान किया तथा मैत्रीपूर्ण संबंधों के उद्देश्य से उसके साथ राजनैतिक संबंध स्थापित किये। 1954 तक भारत–चीन मित्रता का वातावरण इतना मधुर बन गया कि दोनों देशों में हिन्दी चीनी भाई–भाई के नारे लगने लगे। दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने 29 अप्रेल 1954 को पंचशील के समझौते पर हस्ताक्षर कर इस मित्रता को और मजबूत बनाया। जून 1954 में चीन के प्रधानमंत्री चाऊ–एन–लाइ ने भारत की तथा अक्टूबर 1954 में भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने चीन की यात्रा की। इसी वर्ष आठ वर्षीय व्यापारिक समझौता भी सम्पन्न हुआ। जिसके तहत भारत ने मैत्री की पराकाष्ठा का परिचय देते हुए तिब्बत में चीनी प्रभुसत्ता को स्वीकार कर लिया, जो आगे चलकर भारत की एक बडी राजनैतिक भूल सिद्ध हुई।

भारत ने विभिन्न पक्षों में चीन का समर्थन करते हुए मित्रता का निर्वाह करने का पूर्ण प्रयास किया, विस्तारवादी नीति का समर्थक चीन अपनी विश्वासघाती कूटनीतिक चालों से भारत को धोखा देता रहा। भारत–चीन विवाद का प्रमुख कारण है– सीमा विवाद। भारत चीन के मध्य सीमा पर एक पर्वतीय सीमा है

जो विश्व के सबसे ऊंचे पर्वतीय क्षेत्र हिमालय से होकर निकलती है। ऊँचे दुर्गम पर्वतीय क्षेत्रों में यह सीमा केवल मानचित्र तक ही सीमित रही, वास्तव में धरातल पर कभी अंकित ही नहीं की गई यही तथ्य इस विवाद का कारण बना। भारत–चीन के मध्य तिब्बत एक अन्तस्थ क्षेत्र (बफर जोन) था। 1950 में चीन ने अपनी विस्तारवादी नीति का अनुसरण करते हुए तिब्बत पर आधिपत्य स्थापित कर इसे अपना प्रान्त घोषित कर दिया, फलस्वरूप भारत और चीन की सीमाएँ मिल गई, तिब्बत पर अधिकार ने चीन को सामरिक रूप से बहुत लाभप्रद स्थिति में पहुँचा दिया। भारत ने मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखने के लिए चीन के तिब्बत पर आधिपत्य का विरोध नहीं किया, जिसे चीन ने कमजोरी मानते हुए 1951 में ऐसे अप्रमाणिक मानचित्र प्रकाशित किये जिनमें भारत के एक बड़े सीमावर्ती भाग को चीन के अर्न्तगत प्रदर्शित किया गया था। भारत द्वारा आपत्ति पर चीन ने यह कह कर टाल दिया कि यह मानचित्र कोमिन्तांग सरकार के पुराने मानचित्र है, जिसे समय मिलने पर संशोधित कर दिया जाएगा। दूसरी ओर तिब्बत के खम्पा क्षेत्र में 1959 तक चीनी शासन के विरूद्ध विद्रोह चलता रहा जिसे दलाईलामा का समर्थन प्राप्त था। चीन सरकार के कठोर रवैये के कारण 31 मार्च, 1959 को दलाईलामा ने अपने समर्थकों के साथ भारत में राजनीतिक शरण ली। चीन ने इसे शत्रुतापूर्ण कार्य बताया। वस्तुतः इसी समय से भारत और चीन के संबंध बिगड़ना प्रारम्भ हो गये। 1 जनवरी 2000 में एक और धर्मगुरु करमापा ने भी भारत में शरण ली है। मैकमोहन रेखा उत्तरपूर्व में भारत चीन सीमा का विभाजन करती है, भारत ने इसे सदैव वैध सीमा रेखा माना है जबकि चीन इसे एक साम्राज्यवादी रेखा कह कर इसकी निन्दा करता है। लद्दाख सदा से जम्मू–कश्मीर राज्य का अंग रहा है और अक्साई चीन कश्मीर के लद्दाख प्रान्त का भाग है। चीन ने भारत के दो क्षेत्रों अक्साई चीन और अरूणाचल प्रदेश के अधिकांश हिस्सों पर अपना अधिकार जताया। यह मतभेद विभिन्न वार्ताओं के बाद भी नहीं सुलझाया जा सका। और अन्ततः अक्टूबर 1962 में अपनी विस्तारवादी नीति और शक्ति प्रदर्शन हेतु चीन ने पूरी तैयारी के साथ भारत पर हमला कर दिया जिसने आपसी मित्रता व पंचशील को समाप्त कर दिया।

चीन आज विश्व की दूसरी सबसे बड़ी सशक्त आर्थिक सामरिक शक्ति बन चुका है, किन्तु सबल और सशक्त होता भारत, चीनी वर्चस्व को चुनौती दे सकता है। इसी भय के कारण चीन भारत को 1962 जैसी असफलता की स्थिति में लाने हेतु कई हथकंडे अपना रहा है। चीन–पाक गलियारा भी इसी का एक उदाहरण है। ब्रिक्स विकास बैंक का मुख्यालय स्वयं अपने पास रखकर भी वह स्वयं को सशक्त बनाने का प्रयास कर रहा है। चीन की वन बैल्ट वन रोड़ परियोजना भी स्वयं हित पर आधारित योजना है क्योंकि यह पश्चिमी देशों के साथ चीन को जोड़ती है, जिससे वैश्विक मामलों में चीन की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जायेगी। हाल ही में डोकलाम पठार को लेकर दोनों देशों में एक बार फिर नया विवाद पैदा हुआ है। दरअसल डोकलाम पठार को लेकर भूटान और चीन में लम्बे समय से विवाद चल रहा है, भारत इस मुद्दे पर भूटान का समर्थन कर रहा है। डोकलाम क्षेत्र में चीन द्वारा सड़क निर्माण को लेकर भारत ने विरोध दर्ज कराया तो जवाब में चीनी सैनिकों ने भारत के दो बंकरों को निशाना बनाया। अतः चीन निरन्तर रूप से अपनी किसी न किसी हरकत से भारत को बताना चाह रहा है कि वह अब 1962 से भी अधिक शक्तिशाली हो चुका हैं, जवाब में भारत भी यह बताने का कोई मौका नहीं छोड़ता कि 2017 के दौर में वह अपनी सम्प्रभुता और सीमा की रक्षा करने में अधिक सक्षम हो चुका है।

प्रस्तुत शोध में दक्षिण एशिया के दो प्रमुख देशों भारत–चीन के सभी संबंधो का विस्तृत विवेचन किया जाएगा। दोनों देशों के बिगडें संबंधों के ऐतिहासिक कारणों सहित 2004 से वर्तमान तक की प्रमुख घटनाओं तथा इनके वैश्विक प्रभावों का भी अध्ययन करने का प्रयास किया जाएगा।

प्रस्तावित शोध का महत्त्वः

प्रस्तुत शोध में भारत–चीन संबंधों का विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इसके महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इनका अध्ययन अति आवश्यक है। वर्तमान वैश्विक परिपेक्ष्य में भारत–चीन संबंधों का अध्ययन एशिया व दक्षिण एशिया की राजनीति को समझने हेतु भी आवश्यक है। बहुध्रुवीय विश्व में शक्ति संतुलन एवं सामुहिक सुरक्षा के सिद्धान्तों का वैज्ञानिक अध्ययन भारत–चीन संबंधों के अध्ययन के अभाव में नहीं किया जा सकता है। आर्थिक युग में एशिया की दो शक्तियों का अध्ययन अन्य राष्ट्रों की विदेश नीति को समझने में भी सहायक है।

बदलते परिपेक्ष्य में भारत–चीन संबंध भी निरन्तर बदल रहे हैं, जिनका विश्व राजनीति पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है, दूसरी ओर अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं ने भी भारत–चीन संबंधों को प्रभावित किया है। अतः दोनों देशों के राजनयिक, व्यापारिक, सांस्कृतिक आदि संबंधों का विस्तृत अध्ययन आवश्यक है।

भारत ने चीन को लेकर सदैव ही 'कोल्ड पीस' (निष्क्रियता ओढ़कर शान्ति बनाए रखने) की नीति अपनाई है, अतः आवश्यकता है कि भारत चीन के प्रति अपनी नीति में बदलाव करें। किन्तु नीति कैसी हो कि हमारा राष्ट्रीय हित भी प्रभावित न हो और अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति भी प्रभावित न हो। अतः संबंधित बिन्दुओं को दृष्टिगत रखते हुए अध्ययन महत्त्वपूर्ण व आवश्यक है, अध्ययन भविष्य के नीति निर्माताओं व शोधार्थियों हेतु उपयोगी सिद्ध होगा।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्यः

प्रस्तावित शोध "भारत–चीन संबंध : 2004 से वर्तमान तक" का उद्देश्य भारत–चीन संबंधों का 2004 के बाद से वर्तमान तक विशद अवलोकन करना है। दोनों देशों के संबंधों से एशिया एवं विश्व राजनीति में आये परिवर्तनों का अध्ययन करना शोध का प्रमुख उद्देश्य हैं। प्रस्तावित शोध के अन्य प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है :

- सन् 2004 के बाद उन विषयों का विश्लेषण करना, जिन्होने भारत चीन संबंधों को नवीन स्वरूप प्रदान किया है।
- स्वतंत्रता के बाद से वर्तमान तक भारत–चीन संबंधों में क्या परिवर्तन हुए हैं, इन्होनें क्षेत्रीय शक्ति संतुलन में क्या भूमिका निभाई है, का अध्ययन करना।
- भारत–चीन संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करना।
- बहुध्रुवीय विश्व में आर्थिक परिपेक्ष्य के संदर्भ में नवऔपनिवेशिक अवधारणा का विश्लेषण करना
- भारत–चीन संबंधों में विवाद एवं तनाव के प्रमुख कारण क्या हैं, इन कारणों का वर्तमान संदर्भ में अध्ययन करना।
- दक्षिण एशिया के शक्ति संतुलन में भारत–चीन संबंधों की भूमिका का विश्लेषण करना।
- क्षेत्रीय सहयोग के संगठनों में दोनो राष्ट्रों की भूमिका का विश्लेषण कर इन सहयोग संगठनों की उपादेयता का विवेचन करना।
- भारत–चीन की विदेश नीतियों का पडोसी देशों के प्रति नीति के संदर्भ में संबंधों का विश्लेषण करना।

4. (A). Chapter wise detail of proposed research

4.(अ). प्रस्तावित शोध के अध्याय

अध्याय प्रथम :

परिचयात्मक

प्रथम अध्याय में भारत–चीन संबंधों का ऐतिहासिक एवं वर्तमान प्रवृत्तियों का अध्ययन किया जाएगा, तत्पश्चात् वैश्विक राजनीति में दोनों की भूमिका का विश्लेषण किया जाएगा। शक्ति संतुलन, सामुहिक सुरक्षा एवं वैश्विक शान्ति में दोनों देशों की भूमिका का विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही दोनो देशों की व्यवस्था, प्रक्रिया, प्रतिमानों एवं विचारधाराओं का अध्ययन कर उन विषयों पर प्रकाश डाला जाएगा कि दोनों देशों के मध्य तनाव के मुख्य मुद्दे क्या है और दोनो देशों के संबंधों में इन्होनें क्या प्रभाव डाला है। इन्हीं तनाव के बिन्दुओं से संबंधित विभिन्न संधियों, समझौतों एवं वार्ताओं का भी आलोचनात्मक अध्ययन किया जाएगा।

अध्याय द्वितीय :

भारत–चीन राजनीतिक एवं कूटनीतिक संबंध (2004 से वर्तमान तक)

द्वितीय अध्याय में दोनों देशों की राजनीतिक व्यवस्थाओं प्रक्रियाओं एवं विचारधाराओं का अध्ययन कर वैश्विक एवं दक्षिणी एशिया की राजनीति के सन्दर्भ में अध्ययन कर यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि परिवर्तित वैश्विक एवं दक्षिणी एशियाई राजनीति में इनकी क्या भूमिका है।

अध्याय तृतीय :

भारत–चीन आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबध (2004 से वर्तमान तक)

दक्षिण एशिया के संदर्भ में दोनों देशों की ऐतिहासिक, कूटनीतिक, भौगोलिक, आर्थिक एवं व्यापारिक तत्वों के अध्ययन के अभाव में राजनीतिक संबंधों का अध्ययन व्यर्थ है। नव औपनिवेशिक काल में दोनों देशों की संस्कृति एवं अर्थतन्त्र के माध्यम से जानने का प्रयास किया जाएगा कि इन संबंधों की प्रासांगिकता क्या है।

अध्याय चतुर्थ :

भारत–चीन संबंधों का दक्षिण एशिया पर प्रभाव

वर्तमान वैश्विक राजनीति क्षेत्रीय सहयोग संगठनों पर निर्भर करती है। यही क्षेत्रीय सहयोग संगठन वैश्विक राजनीति को प्रभावित कर शक्ति सन्तुलन एवं सामूहिक सुरक्षा को प्रभावित करते हैं। दक्षिण एशिया की दो महाशक्तियों के अध्ययनों के अभाव में दक्षिण एशियाई राजनीति का अध्ययन संभव नहीं है, अतः इस अध्याय में भारत–चीन के आपसी संबंधों का दक्षिण एशिया की राजनीति पर पड़ने वाले प्रभावों के अध्ययन का प्रयास किया जाएगा।

अध्याय पंचम :

निष्कर्ष एवं सुझाव

इस अध्याय में शोध अध्ययन के निष्कर्षों का मूल्यांकन क्रमबद्ध रूप से अभिव्यक्त किया जाएगा। साथ ही समीचीन सुझावों को भी प्रस्तुत किया जाएगा।

5. Review (work alredy done on the subject of Proposed research Study)

प्रस्तावित शोध विषय के साहित्य का सर्वेक्षण

1. **जे. एन. दीक्षित** : 2017 : **भारतीय विदेश नीति** (प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली) पुस्तक में गत् पचास वर्षों की अवधि के विस्तृत फलक पर भारतीय विदेश नीति के विभिन्न चित्र सशक्त तथा प्रभावशाली ढंग से उकेरे गए है। लेखक ने महत्त्वपूर्ण आख्यान का वर्णन करते समय कालक्रमानुसार भारत की विदेश नीति के विविध पक्षों को उजागर किया है। इस पुस्तक में विश्व के विभिन्न देशों विशेष रूप से अमेरिका, रूस, चीन, तथा पाकिस्तान के साथ भारत के संबंधों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करते हुए घटनाओं के सन्दर्भ में अन्तर्राट्रीय संबंधों का विशद विवेचन किया गया है।

2. **डा. त्रिपाठी एवं डा. बी. आर. दीपक** : 2012 : **इंडिया चाइना रिलेशन्स : फ्यूचर परसपेक्टिव** (वी आई जे बुक्स, इंडिया न्यू देलही) पुस्तक में विभिन्न शोधार्थियों, कुटनीतिज्ञों एवं राजनीतिक चरित्रों द्वारा 18 निबंध लिखे गये है जो हमें दोनों देशों के इतिहास, नागरिकता, शिक्षा, आर्थिक स्थिति, सीमा विवाद, तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में दोनों देशों के योगदान के बारे में बताती है, साथ ही यह भी बताया गया है कि वैश्वीकरण के इस दौर में किस प्रकार दोनों देशों ने अपने उत्तरदायित्व निभाएं।

3. **डा. भगवतशरण उपाध्याय** : 2014: **"भारत के पडोसी देश"** (राजपाल एण्ड सन्स पब्लिशर्स, नई दिल्ली) पुस्तक में संक्षिप्त रूप में यह बताया गया है कि किस प्रकार भारत व उसके पडोसी देशों के संबंधों को सुधारा जा सकता है। साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के संबंध में विभिन्न सुझाव दिये गए है।

4. **केशव मिश्रा एवं प्रवीण भारद्वाज** : 2016 : **20 वीं सदी में भारत–चीन संबंध** (जेनेक्सट् पब्लिशर्स, नई दिल्ली) पुस्तक में भारत व चीन की स्वतन्त्रता से पूर्व से बीसवीं शताब्दी के अन्त तक के आपसी संबंधों के बारे में विस्तृत विचार विमर्श प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक यह भी बताती है कि किस प्रकार चीन ने स्वयं को एक महाशक्ति बनाने की जद्दोजहद में भारत के साथ संबंधों को बहुत तनावपूर्ण कर लिया है और स्वयं की नीति दोहरें घाव करने वाली बना ली है।

5. **डा. वी. एन. खन्ना** : 2015 : **"अन्तर्राष्ट्रीय संबंध"** (विकास पब्लिशिंग, हाऊस नई दिल्ली) पुस्तक में अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों की विस्तृत विवेचना की गई है, जिसमें भारत–चीन संबंध भी एक खण्ड है। पुस्तक को दो खण्डों में विभाजित किया गया है खण्ड 1 : सैद्धान्तिक परिपेक्ष्य, खण्ड 2 : ऐतिहासिक अवलोकन।

6. **भावना पोखरना** : 2012 : **इंडिया चाइना रिलेशन्स : डाइमेन्संस एण्ड परसपेक्टिव** (न्यू सेंचुरी पब्लिकेशन्स, न्यू देहली) पुस्तक में बताया गया है कि भारत–चीन दोनो उभरती हुई सुपर पावर है जो कि 21वीं सदी में एशियन सेंचुरी बनाएगी। पुस्तक में भारत–चीन के क्षेत्रीय और वैश्विक सन्दर्भ में सुखद दुखद संबंधों का परीक्षण किया गया है। भारत–चीन के संबंधों की धनिष्ठता में सीमा विवाद और तिब्बत समस्या को प्रमुख रूकावट बताया गया है। पुस्तक में वर्तमान परिस्थितियों में दोनों देशों के संबंधों में सुधार हेतु सुझाव भी दिये गए हैं।

7. **अरूण शौरी** : 2012 :**"चीन मित्र या.... ?"** (प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली) पुस्तक चीन द्वारा प्राप्त की जाने वाली शक्तियों, उसकी रणनीतियों और भारत के संदर्भ में उनके परिणामों की समीक्षा करती है, साथ ही भारत चीन संबंधों के अतीत, वर्तमान एवं भविष्य की पड़ताल भी करती है। पुस्तक के अन्तिम भाग में बताया गया है कि किस प्रकार पिछले कई दशकों से चीन भारत को घेरने और उसे दक्षिण एशिया में उलझाकर रखने की सोची समझी नीति अपना रहा है।

8. **डा. आर. एस. यादव** : 2013 : **"भारत की विदेश नीति"** (प्रिजन पब्लिकेशन, नई दिल्ली) पुस्तक में भारत की विदेश नीति का विस्तृत से वर्णन किया गया है। साथ ही भारत के पडोसी देशों के साथ संबंधों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। जिसमें भारत चीन संबंधों के निरन्तर बदलते स्वरूप की भी विस्तार से व्याख्या की गई है।

9. **मोहन गुरुस्वामी एवं जोरावर दौलत सिंह** : 2009 : **इण्डिया चाइना रिलेशन्स** (विकास बुक्स, न्यू देलही) पुस्तक में लेखक ने आसान शब्दों में भारत–चीन सीमा विवाद को समझानें का प्रयत्न किया है, पुस्तक में बताया गया है कि विभिन्न मुद्दों पर भारत और चीन के विचार एक समान होते हुए भी सीमा विवाद के कारण दोनों के मन में शत्रुता के भाव बने रहते है। दोनों एक दूसरे से अपेक्षा रखते है किन्तु स्वयं प्रयास नहीं करते।

10. **अरूण शौरी** : 2011 : **भारत–चीन संबंध** (प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली) पुस्तक भारत चीन के ऐतिहासिक संबंधों के वर्णन के साथ ही भारत चीन युद्ध, भारत की चीन के प्रति गलतियों का विवेचन किया गया है। पुस्तक, चीनियों द्वारा हमें सिखाए गये सबक जो हमने नहीं सीखे, को उद्घाटित कर अर्न्तमन्थन और पुनर्विचार करने का मार्ग प्रशस्त करती है।

11. **फ्रांसिस आर. फ्रेकल एण्ड हैरी हार्डिग** : 2004 : **दी इंडिया चाइना रिलेशन्सशिप** (कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस) पुस्तक 21वीं सदी में भारत–चीन के उलझे और लम्बे संबंधों का विवेचन करती है। एशिया में दोनों देशों के दबदबे की होड़, दोनों देशों की आन्तरिक समस्याओं, के बारें में भी पुस्तक में विवेचन किया गया है, साथ ही दोनों देशों का अमेरिका के साथ संबंधों और इन संबंधों का दोनों के आपसी संबंधों पर पड़ने वाले प्रभावों की भी व्याख्या की गई है।

12. **वंदना अस्थाना** : 2002 : **इंडियाज फॉरेन पॉलिसी एण्ड सब–कोन्टीनेन्टल पॉलिटिक्स** (कनिष्का पब्लिशर्स, न्यू देलही) पुस्तक में लेखिका ने बताया है कि भारत–चीन के संबंध अत्यधिक जटिल है, पुस्तक में भारत–चीन के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक राजनीतिक संबंधों का विस्तार से वर्णन किया गया है। पुस्तक में यह भी बताया गया है कि भारत–चीन संबंधों को कई पारस्परिक बाहरी एवं आन्तरिक कारकों ने भी प्रभावित किया है।

6.Research gaps identisied in the proposed field of investigation

अनुसंधान के प्रस्तावित क्षेत्र के शोध अन्तराल की पहचान

- अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सन्दर्भ में भारत–चीन संबंधों पर हुए संस्थागत, व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक अध्ययनों में स्वतंत्र एवं सांगोपांग अध्ययन का अभाव रहा है।

- भारत–चीन संबंधों की प्रकृति पर हुए अध्ययन या तो वर्णनात्मक रहे या विचारधारा से प्रेरित रहे हैं, अतः विषय पर अभी तक वस्तुगत अध्ययन नहीं किया गया है।

- भारत–चीन संबंध पर किये गये अध्ययनों में आनुभाविक अध्ययन का अभाव रहा है या तो यह अपनी प्रकृति से नकारात्मक, एक पक्षीय या मुद्दे आधारित रहे, इस अध्ययन के द्वारा दोनों देशों के संबंधों एवं प्रकृति का अध्ययन किया जायेगा।

- भारत–चीन के मध्य अन्तःक्रियात्मक अध्ययन नहीं हुआ है। वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में यह प्रकृति शनैः–शनैः प्रखर और स्पष्ट होती जा रही है, इसका बहुध्रुवीय विश्व एवं शक्ति सन्तुलन पर क्या प्रभाव पड़ा है ? भविष्य में क्या पड़ सकता है? ओर इसे कैसा होना चाहिए। इस संदर्भ में यह शोध अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति एवं दक्षिण एशिया के संदर्भ में नवीन प्रवृतियों के अध्ययन का प्रयास है।

7. Major Hypothesis

परिकल्पना

प्रस्तावित शोध की परिकल्पना निम्नलिखित है–

- भारत और चीन दोनों के ऐतिहासिक दृष्टि से संबंध रहे हैं।
- दोनों देशों के मध्य द्वि–पक्षीय संबंधों में व्यापारिक, आर्थिक आदान–प्रदान, सुरक्षा, व्यावसायिक, तकनीकी, सांस्कृतिक, शैक्षणिक संबंध प्रमुख आधार रहे हैं।
- प्रारम्भ से ही सीमा विवाद ने दोनों देशों के संबंधों को प्रभावित किया हैं।
- दोनों ही देश बढ़ती हुई आर्थिक और सैनिक शक्ति के द्वारा दक्षिण एशिया में अपना शक्ति प्रभुत्व स्थापित करना चाह रहे हैं।
- भारत–चीन संबंधों की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की प्रकृति, स्वरूप व शैली के निर्धारण नें प्रमुख भूमिका हैं।

8. Research Methodology

शोध प्रविधि

- प्रस्तुत अध्ययन में भारत–चीन संबंधों में ऐतिहासिक परिपेक्ष्य का अध्ययन करने के लिए ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग किया जाएगा।

- दोनों देशों के मध्य संबंधों के अध्ययन के लिए वर्णनात्मक पद्धति एवं तनाव के बिन्दुओं के अध्ययन हेतु अन्वेषणात्मक व विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया जाएगा।

- तथ्य एकत्रित करने हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों का प्रयोग किया जाएगा। प्राथमिक स्त्रोत के अन्तर्गत भारत–चीन संबंध के विषय विशेषज्ञों के व्यक्तिगत साक्षात्कार लिए जाएंगे। तथा द्वितियक स्त्रोतों के अन्तर्गत पुस्तकों, समाचार पत्रों, जनरल्स, इन्टरनेट, पत्रिकाओं आदि का प्रयोग किया जाएगा।

- अध्ययन में विश्लेषणात्मक, ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, वैज्ञानिक एवं साक्षात्कार पद्धति का प्रयोग किया जाएगा।

उपर्युक्त प्रस्तुत विभिन्न अध्ययन पद्धतियों से उपलब्ध सामग्री के विश्लेषण एवं निष्कर्ष पर ही तथ्यात्मकता और अध्ययन की गहनता से शोधार्थी मूल्यांकनत्मकता की स्थिति पर पहुंचने का प्रयास करेगा, विषय की मूलभूत संदर्भ पुस्तकों एवं पत्र–पत्रिकाओं के अध्ययन के आधार पर शोध विषय का अध्ययन किया जाएगा।

9. List of references cited

सन्दर्भ– ग्रन्थ सूची

- दीक्षित, जे. एन. : भारतीय विदेश नीति (2017) प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
- मिश्रा, केशव और भारद्वाज, प्रवीण : बीसवीं सदी में भारत–चीन संबंध (2016) जेनेक्सट पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
- पंत, पुष्पेश : भारत की विदेश नीति (2016) मेग्रेव हिल्स एज्युकेशन, नई दिल्ली।
- जैन, पुखराज : तुलनात्मक शासन एवं राजनीति (2016) साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
- खन्ना, वी.एन. : अर्न्तराष्ट्रीय संबंध (2015) विकास पब्लिशिंग हाउस, नोएडा (उ.प्र.)
- फडिया, बी. एल. : अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति (2015) साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
- खत्री, हरीश कुमार : भारत की विदेश नीति (2014) कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल।
- पंत पुष्पेश : 21वीं शताब्दी में अर्न्तराष्ट्रीय संबंध (2014) मेग्रेव हिल्स एज्युकेशन, नई दिल्ली।
- उपाध्याय, भगवतशरण : भारत और पडोसी देश (2014) राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली।
- जैन, वी. सी : भारत की विदेश नीति (2014) अटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
- यादव, आर. एस. : भारत की विदेश नीति (2013) प्रिजन पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
- शौरी, अरूण : चीन मित्र था......? (2012) प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
- विद्यालंकार, सत्यकेतु : विश्व की राजनीति और अन्तर्राष्ट्रीय संबध (2012) श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली।
- पोखरना, भावना : इंडिया चाइना रिलेशन्स डाइमेन्संस एण्ड परसपेक्टिव (2012) न्यू सेंचूरी पब्लिकेशन्स, न्यू देलही।

- देशपाण्डे, जी. के. : लुकिंग इनटो नेक्सट् मिलेनियमः इंडिया एण्ड चाइना इन इन्टरनेशनल स्टडिज (2012) कोगन पेज पब्लिकेशन, न्यू देलही।
- त्रिपाठी और दीपक, बी. आर. : इंडिया चाइना रिलेशन्स : फ्यूचर परसपेक्टिव (2012) वी आई जे बुक्स इंडिया, न्यू देलही।
- शौरी, अरूण : भारत–चीन संबंध (2011) प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
- गुरु स्वामी, मोहन और दौलतसिंह, जोरावर : इंडिया चाइना रिलेशंस : दी बॉर्डर इश्यू एण्ड वियोंड (2009) विकास बुक्स न्यू देलही।
- गुप्ता और सैन, भाभानी : सार्क–आसियान : प्रोसपेक्ट्स एण्ड प्रोब्लम्स ऑफ इन्टर–रिजनल कोपरेशन (2007) साउथ एशियन पब्लिशर्स, न्यू देलही।
- खन्ना बी. एन. और अरोडा लिपाक्षी : भारत की विदेश नीति (2007) विकास पब्लिशिंग हाऊस, नोएडा (उ.प्र.)
- गौतम, बी.पी. : भारत की विदेश नीति (2006) मयूर पेपरबैक्स, नई दिल्ली।
- दीक्षित, जे. एन. : भारत की विदेश नीति और इनके पड़ोसी (2005) ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- धर्मदासानी, एम. डी. : कन्टमपर्री साउथ एशिया (2005) शालीमार पब्लिशिंग हाऊस, वाराणसी।
- फ्रेंकल, फ्रांसिंन आर. और हार्डिंग हैरी : दी इंडिया चाइना रिलेशंसशिफ (2004) कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस।
- चौपड़ा, सुरेन्द्र : स्ट्डिज इन इंडियाज फॉरेन पॉलिसी (2003) गुरुनानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर।
- अस्थाना, बंदना : इंडियाज फोरेन पॉलेसी एण्ड सब–कोंटिनेंटल पॉलिटिक्स (2002) कनिष्का पब्लिशर्स, न्यू देलही।
- बिन्द्रा, एस. एस. : इंडिया एण्ड हर नेबर्स (2002) दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन्स, न्यू देलही।
- गुप्ता, एम. जी. : इंडियाज फॉरेन पॉलिसी (2001) वाई. बी. पब्लिशर्स, आगरा।

- जैन, श्रीपाल, पंत पुष्पेश, और पंचोला, राखी : अन्तर्राष्ट्रीय संबंध (2000) मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।
- वर्मा, दीनानाथ : अन्तर्राष्ट्रीय संबंध (1996) ज्ञानदा प्रकाशन, पटना
- वैदिक, वेद प्रताप : भारतीय विदेश नीति : नये दिशा संकेत (1995) नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।

जनरल और पत्र पत्रिकाएं :

1. इकॉनोमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली, नई दिल्ली।
2. साउथ एशियन जनरल ऑफ सोशो, पॉलिटिकल स्टेडीज, केरल
3. इण्डियन जनरल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, नई दिल्ली।
4. योजना, नई दिल्ली
5. द स्टेट्मेन्ट वीकली, कोलकाता
6. द एशियन ऐज, नई दिल्ली
7. न्यू ऐज, नई दिल्ली
8. सेमिनार, नई दिल्ली

समाचार पत्र :

1. टाइम्स ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली
2. हिन्दुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली
3. इण्डियन एक्सप्रेस, नई दिल्ली
4. द हिन्दु, नई दिल्ली
5. जनसत्ता, नई दिल्ली
6. दैनिक जागरण, नई दिल्ली

8/11/2017

Signature of Candidate with date

Outline Approved

8/11/17

Name and Signature of Supervisor

With date and Seal

Lecturer
Samrat Prithviraj Chauhan
Govt. College, Ajmer

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Appendix - VI

Certificate by Supervisor

Certified that :

1. I am willing to guide the research work of Mr. DEEPAK BARIYA on the above subject if she registered for Ph.D.
2. To the best of my knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studied so far in any University.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline and bibliography, etc. submitted by the candidate.
5. Necessary facilities are available in the department for the above research work (Certificate from Principal/ Head University Department with regards to facilities available is enclosed).
6. I have 08 Research candidate registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application being forwarded for registration is 03 (give the serial number).
7. The candidate is not in a close relation (the term of close relation is fefined in the examination ordinance of the University).

8/11/17

Signature of the supervisor with date

Lecturer
Samrat Prithviraj Chauhan
Govt. College, Ajmer

CERTIFICATE

Certificate that the available facilities will be extended to Mr. DEEPAK BARIYA for research work if she registered for Ph.D.

Singnature of the Principal/
Director of the Institution
with date

उप प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

8.11.2017

Signature of the Head
Department with date

Lecturer
Samrat Prithviraj Chauhan
Govt. College, Ajmer